जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल
जी.बी.एच. मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल
जी.बी.एच. जनरल हॉस्पीटल

जी.बी.एच. आरोग्यम्

राजधानी के बाहर राजस्थान का एकमात्र NABH प्रमाणित हॉस्पीटल

वर्ष – 5 । अंक 18 दिसम्बर–जनवरी– फरवरी 2016

आईये, मिलकर केंसर को हरायें।

प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं

9 वर्षो की पारदर्शी एवं प्रतिष्ठित चिकित्सकीय सेवाओं के उपरान्त

आम जन के लिए न्यूनतम दरों में चिकित्सा : जीबीएच जनरल हॉस्पीटल

जीबीएच जनरल हॉस्पीटल उदयपुर शहर के नजदीक एयरपोर्ट रोड़ पर ट्रांसपोर्ट नगर, बेडवास में सुरम्य वातावरण में अरावली की पहाडियों के बीच शांतिपूर्ण माहौल में स्थापित किया गया हैं। यह **300** शैय्याओं का अत्याधुनिक हॉस्पीटल है। जो जीबीएच जनरल हॉस्पीटल के रूप में सबसे न्यूनतम दरों पर चिकित्सा उपलब्ध कराने के मकसद से शुरू किया गया हैं।

डॉ. कीर्ति जैन केंसर चिकित्सक एवं रक्त विज्ञान के विशेषज्ञ है। आपने अपने शहर उदयपुर के बेड़वास क्षेत्र में आधुनिकतम सुविधाओं से सुसज्जित दक्षिण राजस्थान का प्रथम केंसर हॉस्पिटल स्थापित किया है, जहाँ सभी प्रकार के केंसर रोगों का उपचार, केंसर सर्जरी, कीमोथेरेपी एवं अत्याधुनिक लिनियर एक्सिलरेटर मशीन से रेडियेशन थेरेपी की सुविधा उपलब्ध हैं।

आम जन को अत्याधुनिक चिकित्सा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से **2006** में उदयपुर में मल्टी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पीटल, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की स्थापना की। यह देखते हुए कि जनजाति बाहुल्य मेंवाड़ एवं आस पास के रोगियों को एक समय चिकित्सा के लिए गुजरात, मुम्बई, जाने को मजबूर थे। जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ के विशेषज्ञ चिकित्सकों की **9** वर्षो की पारदर्शी एवं उत्कृष्ट चिकित्सा से **3,50,000** रोगियों को चिकित्सकीय परामर्श, **50,000** एडमिशन, **25,000** जनरल सर्जीकल ऑपरेशन, **1000** निः शुल्क ग्रामीण शिविर के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए समर्पित है। साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को भी सभी प्रकार की अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के सजग प्रयास किये गये। जहाँ पुर्नभुगतान की सुविधा उपलब्ध करवा कर रोगियों को बिना किसी भुगतान के चिकित्सा सेवाएं देने में सक्षम हैं **24** घण्टे त्वरित चिकित्सा उपलब्ध करवाने में सक्षम प्रयास किये हैं।

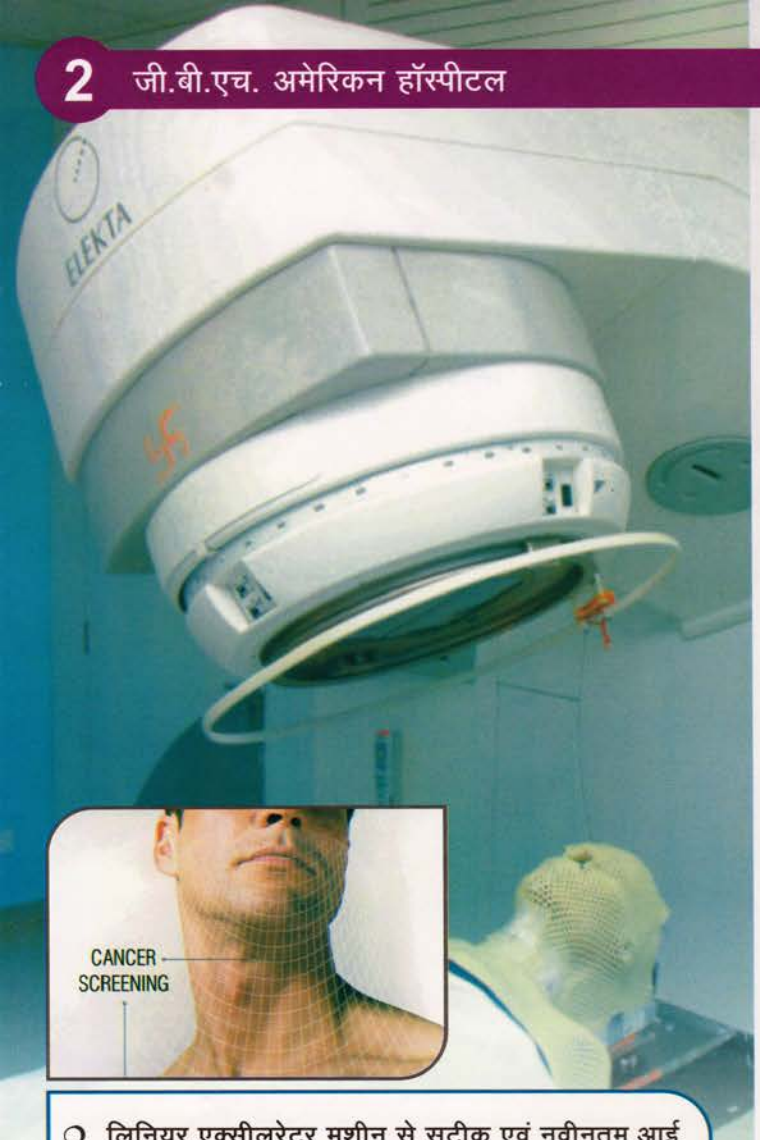

- लिनियर एक्सीलरेटर मशीन से सटीक एवं नवीनतम आई. जी.आर.टी –इमेज गाईडेड रेडियेशन थेरेपी–IGRT) पद्धति द्वारा केंसर उपचार की सुविधा है।
- शरीर के एकदम सतह पर होने वाले केंसर से लेकर शरीर के अंदर किसी भी गहराई में केंसर ट्यूमर को पूर्ण खत्म करने में सक्षम हैं।

शल्यचिकित्सा

कीमोथेरेपी

रेडिएशन

डॉ. ममता लोढ़ा
डी.एन.बी. (रेडियेशन आंकोलॉजी)
एसो. कन्सलटेंट रेडियेशन आंकोलॉजिस्ट
जी.बी.एच. मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल

अब निशाना सीधा केंसर ट्यूमर पर

रेडियेशन थेरेपी केंसर रोगियों के लिए राहत भरी खबर है। उदयपुर संभाग का एक मात्र सम्पूर्ण केंसर रोग निवारण केन्द्र जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल जहां रेडियेशन थेरेपी के लिए अत्याधुनिक लीनेक (लिनियर एक्सीलीरेटर) मशीन स्थापित की गई है। जिससे न्यूनतम साईड इफेक्ट से इलाज सम्भव हैं।

रेडियेशन थेरेपी से केंसर का उपचार

रेडियेशन प्रक्रिया में सर्वप्रथम मरीज के केंसर ग्रस्त भाग का सटीक एवं सही आकार व स्थान सीटी स्केन द्वारा निर्धारित किया जाता हैं। इसके आधार पर केंसर विशेषज्ञ रेडियेशन प्लानिंग करते हैं। जिसे केंसर मैनेजमेन्ट भी कहते हैं। शरीर के अन्य अंगों को नुकसान पहुँचाये बिना केंसरग्रस्त कोशिकाओं को नष्ट करना उपचार का मकसद होता है। ट्यूमर टीम द्वारा (केंसर सर्जन, कीमो थेरेपीस्ट, रेडियेशन थेरेपीस्ट) निर्धारित पद्धति के अनुसार उपचार किया जाता हैं। यह दर्द रहित प्रक्रिया है।

छह साल में कराए तीन बार ऑपरेशन, अपने ही शहर में मिली राहत परिवार भी चलाया और केंसर से भी लड़ा

रमेश वरवानी सपत्नीक

वैसे तो बीमारी कैसी भी हो पीडित हिम्मत हारने लगता है। इसका सफर परिवार भी करता है। उदयपुर के रमेश वाधवानी छह साल से केंसर से लडते हुए सफल मुखिया भी साबित हुए। नतीजा रहा कि केंसर जैसी बीमारी से डरने की बजाय लड़ने से केंसर पर विजय प्राप्त की । रमेशजी को **2008** में मुँह का केंसर होने का पता चला। इसके लिए उन्होंने अहमदाबाद में जबड़े का ऑपरेशन कराया। **2011** में फिर जाँचों में केंसर आने का पता चला। इसके लिए फिर ऑपरेशन कराया। ऐसे ही तीसरा ऑपरेशन **2013** में कराना पड़ा। इस समय तक उन्हें अपने ही शहर में इलाज नहीं मिलने से बार–बार अहमदाबाद जाना मजबूरी बना हुआ था। आगे के इलाज के लिए जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पिटल में परामर्श लिया। रेडिएशन थेरेपी से इलाज शुरू किया। इसके बाद पेट सीटी जाँच में उन्हें केंसर मुक्त पाया गया। अब रमेश जी छह साल पूराने केंसर से पूरी तरह जंग जीत चुके है।

नीम हकीम से इलाज कराने से बढ गई थी परेशानी

तंबाकू बना केंसर का कारण, छाले, मसूडे के दर्द से मुँह खुलना हुआ बंद

डूँगरपुर के कांतिलाल गरासिया को दाढ में दर्द की शिकायत थी। खाने, चबाने में तकलीफ पर उसने नीम हकीम से इलाज लेकर दाढ ही निकलवा दी। फिर भी दर्द कम नहीं होने पर अहमदाबाद में जाँच कराई जहाँ बायोप्सी में केंसर का पता चला।

बांसवाडा के महेंद्र कुमार व्यास को एक साल पहले मुँह में छाले हो गए थे। परेशानी लगातार छोले बने रहने से उन्हें खाना खाने और उसके बाद बोलने में तकलीफ थी। छाले आकार में भी बढ रहे थे। इससे धीरे धीरे मुँह खुलना भी बंद हो गया था।

कांतिलाल और महेंद्र कुमार दोनों ही तंबाकू के आदि थे। यह व्यसन उनकी बीमारी का कारण बना और दोनों को जाँच में केंसर मिला। हालांकि गलत लत से हुई परेशानी से दोनों को बोलने, खाने में लगभग एक जैसी तकलीफ थी। इस बीच दूसरी गलती रोग विशेषज्ञ की बजाय सामान्य डॉक्टर या नीम हकीम से इलाज लेना इनके लिए और भारी पड गया। स्थिति यह थी कि वहां इलाज के पैसे भी लग गए और राहत भी नहीं मिली। महेंद्र के छोले से चमडी गल गई थी। दायें आरटीएम में छाला फटकर बाहर आ गए थे।

मेडिकल ऑन्कोलाजी (कीमोथेरेपी की सुविधा)

- निओ एडजूवेन्ट कीमोथेरेपी : केंसर का ऑपरेशन से पूर्व उपचार।
- एडजूवेन्ट कीमोथेरेपी : ऑपरेशन के बाद केंसर को जड़ से मिटाने के लिए उपचार।
- पेलियोटिव कीमोथेरेपी : एडवान्स स्टेज में केंसर रोगी का जीवनकाल बढ़ाने के लिए एवं तकलीफों से मुक्त जीवन प्रदान करने के लिए उपचार।
- मोनोक्लोनल एंअीबोडीज् से न्यूनतम् साइड इंफेक्ट द्वारा उपचार।
- इंजेक्शन एवं गोलियो द्वारा (कीमोथेरेपी) केंसर उपचार।
- सेन्ट्रल वीनस एक्सेस डिवाइस (CVAD) का प्रयोग जैसे किमोपार्ट।
- ब्लड केंसर का ट्रांसप्लाटं एवं दवाईयों द्वारा उपचार।
- सालिड केंसर का दवाईयों द्वारा उपचार।

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल में कांतिलाल की रिपोर्ट का ट्यूमर टीम ने अध्ययन कर ca buccal mucosa पाया। उसका लेट प्रोस्टेरियर सेगमेंटल मैंडिबुलेक्टॉमी विथ फ्लेप पद्वति से ऑपरेशन तय किया गया। केंसर ग्रस्त भाग में रेडिएशन थेरेपी दी गई। अब वह फिर से आहार लेने लगा है। इसी तरह महेंद्र का बाइट एक्सिजन विथ फ्लेप प्रक्रिया से ऑपरेशन किया। उसे भी रेडिएशन थेरेपी दी गई; अब वह भी आहार लेने लगा है और मुँह पहले जैसा खुलने लगा है।

डॉक्टर की राय : डॉ. कुरेश बम्बोरा ने यह सफल ऑपरेशन किए और रोगियों को दर्द से निजात दिलाई। बंबोरा बताते है कि दोनों को तंबाकू से हुई परेशानी के साथ समय पर सही इलाज नहीं मिलना भी कारण बना। यहाँ जाँच रिपोर्ट के अध्ययन के लिए गठित बोर्ड के अध्ययन में जब केंसर डायग्नोस हुआ तो ऑपरेशन और बाद में उपचार का भी डिस्कसन हुआ। इसमें सही तरीके से इलाज के स्टेप तय की गई और मरीजों को भी जल्दी राहत मुहैया हो सकी मुँह का केंसर जबड़े की हड्डी और गले में प्रवेश कर जाता तो बीमारी और बढने का खतरा था। ऐसे में जबड़ा निकालना ही विकल्प रहता हैं। यहाँ ऑपरेशन से जबड़ा बचा लिया गया।

डॉ. मनोज यू. महाजन
डी.एन.बी. (मेडिकल ऑन्कोलॉजी)
बोन मेरो ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ
कन्सलटेंट मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट

जबड़ा बचाकर किया मुँह के केंसर का सफल ऑपरेशन

श्री राकेश कुमार के दाढ़ में निरन्तर दर्द होता रहता था और खाना चबाने में तकलीफ होती थी, जिसके चलते अपनी दाढ़ (Molar tooth) 2014 में निकलवाई। दाढ़ निकलवाने के बाद भी उसका दर्द कम नहीं हो रहा था तो उन्होंने अहमदाबाद के अस्पताल में भी उपचार लिया। जहाँ पर उनकी बायोप्सी करवाई गई और वहाँ के चिकित्सक के अनुसार केंसर का कोई लक्षण होना नहीं बताया गया। जबकि दर्द खत्म ही नही हो रहा था।

जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल के केंसर सर्जन डॉ. कुरेश बम्बोरा से परामर्श लेने आयें। जहाँ दाढ़ के स्थान की पुनः बायोप्सी करवाई गई और ट्यूमर टीम द्वारा अध्ययन किया गया। जिससे ca buccal mucosa का केस पाया। जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल की टीम द्वारा Lt. Posterior Segmental Mandibulectamy with Flap प्रक्रिया को अपनाकर सफल ऑपरेशन किया। केंसर ग्रसित भाग पर रेडियेशन थेरेपी दी गई।

वर्तमान में पुनः जाँच एवं परामर्श लेने आये रोगी इस दर्द से मुक्त हैं एवं अब बिल्कुल ठीक हालात में है। अत्याधुनिक पद्धति अपनाकर ऑपरेशन के बाद रोगी का जबड़ा भी बचाया। अब सामान्य जीवन यापन कर रहा है।

मुँह व गले की परेशानी के लिए तम्बाकू जिम्मेदार।

मुँह और गले के केंसर के मरीज लगातार बढ़ रहें हैं। हर साल लगभग दो लाख मरीज इस केंसर का शिकार हो जाते हैं आइए जानते हैं मर्ज की प्रमुख वजहों के बारे में।

मुँह संबंधी समस्या

इसमें जीभ, गाल, तालू होंठ, ऊपर व नीचे के जबड़े पर घाव होने लगते हैं, जो आगे चलकर गंभीर रूप ले सकते है।

गले की तकलीफ

- यह केंसर नाक के पीछे का हिस्सा, मुँह व श्वासनली के पीछे और भोजन नली को प्रभावित करता है।
- लक्षण गले में दर्द, आवाज में परिवर्तन, बलगम आना, व सांस लेने में तकलीफ।
- इलाज कीमो थेरेपी, सर्जरी व रेडियो थेरेपी से उपचार किया जाता है।

पहचाने मुँह के केंसर को, समय पर अपनायें उपचार

मुँह के केंसर की पूर्व अवस्था वाले घावों के दो समुह होते है। प्रथम ल्यूकोप्लेकिया यानी सफेद धब्बे। जब यह धब्बे दिखाई दें तो केंसर विशेषज्ञ को जरूर दिखाएं। दूसरा समूह हैं सब म्यूकस फाइब्रोसिस। यह तम्बाकू या गुटखे के सेवन से होता हैं इसमें व्यक्ति को आमतौर पर मुँह खोलने में कठिनाई होती हैं तम्बाकू का प्रयोग न करके इसके जोखिम को कम किया जा सकता है।

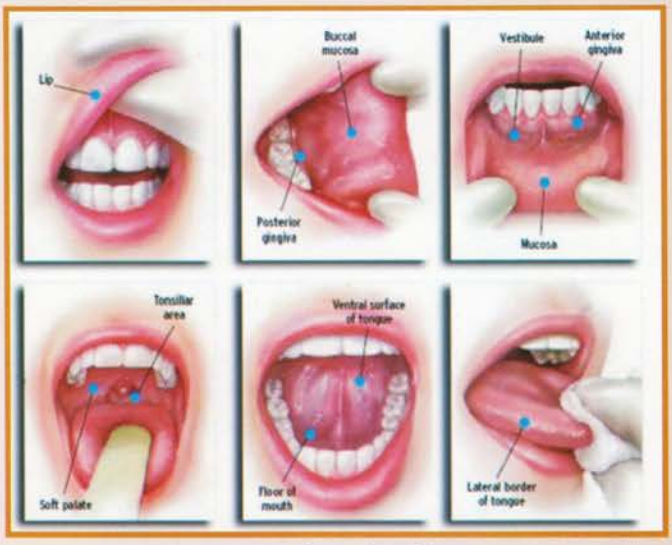

ऑरल केंसर जाँच चार्ट

डॉ. कुरेश बम्बोरा, सीनियर कन्सलटेंट ऑन्कोसर्जन
जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल, उदयपुर।

केंसर का डर और बीमारी दूर हुई छोटे से ऑपरेशन से

सीने का दर्द निकला ब्रेस्ट कैंसर

शुरूआत में सीने में मामूली दर्द था लेकिन समय के साथ बढ़ने लगा। दर्द निवारक दवाईयां भी असर नहीं कर रही थी। जाँच में डॉक्टरों ने ब्रेस्ट कैंसर बताया। उसके बाद से मैं तो डरी हुई थी, परिवार भी परेशान होने लगा। बीमारी ही ऐसी थी कि किसी को बता नहीं सकती थी। कैंसर का नाम ही सभी की परेशानी का कारण बन गया था। जहां जाते एक नया डर लेकर आते थे। मैंने तो आस ही छोड़ दी थी, लेकिन सही मशविरा और इलाज ने हर डर भगा दिया।

यह कहना है उदयपुर के कमला देवी का। वे बताती है कि दर्द के कारण उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी थी। इस बीच इलाज में ब्रेस्ट कैंसर का पता चला और हर अस्पताल में डॉक्टरों ने कैंसर का डर ऐसा बैठा दिया कि मुझे तकलीफ से राहत की बजाय और दिन रात मानसिक पीड़ा भी झेलनी पड़ी। परिवार भी बेचैन रहने लगा। जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल का परामर्श राहत दे गया। यहाँ कुछ सामान्य जाँचे कर स्तन मे बनी गांठ सर्जरी कर निकाला गया। जिससे पुनः जीवन पटरी पर आने लगा और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी निजात से निजात मिल पाई।

टीम वर्क और बोर्ड डिसिजन से तय हुआ इलाज

बायोप्सी रिपोर्ट के बाद मोडिफाइड रेडिकल मेस्टेक्टोमी पद्धति अपना कर ऑपरेशन किया गया। यह निर्णय हॉस्पिटल के डॉक्टरों की टीम और बोर्ड ने लिया। इसमें कैंसर की गांठ ने चमड़ी को पकड़ लिया था। पहले कैंसर का असर नष्ट किया गया। इसे फैलने से रोकने के लिए रेडिएशन थेरेपी दी गई, उसके बाद ऑपरेशन किया गया।

मजबूत इरादों से जीती जा सकती है केंसर से जंग

स्तन कैंसर एक साध्य रोग हैं। इसका निदान एवं उपचार (प्रारम्भिक अवस्था में) रोगी को साधारण जीवन यापन करने में सहायक होता है।

दृढ इच्छाशक्ति और इलाज के प्रति सकारात्मक सोच रखने से कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से भी जिंदगी की जंग जीती जा सकती हैं कई लोगों ने अपने मजबूत इरादों के बल पर इस बीमारी को बाय–बाय कर दिया हैं। कैंसर की जंग में जीत हासिल करने वाली ज्यादातर महिलाएं अपने मजबूत इरादों से इलाज के बाद कामियाब जीवन यापन कर रही हैं।

कैंसर से मुक्ति पा चुके मरीजों का मानना है कि मरीज जितनी जल्दी स्वीकार कर ले कि उसे कैंसर है एवं सकारात्मक सोच रखकर उपचार कराए तो उतनी जल्दी मरीज को बीमारी से निजात मिलती है।

महिलाएं जिनमें स्तन कैंसर की संभावना अधिक रहती है

उम्र का बढ़ना, अधिक उम्र में विवाह, जो गर्भवती नही हुई हो जिनके परिवार में किसी रिश्तेदार को कैंसर हुआ हैं, लम्बे समय तक हॉर्मोन का सेवन, स्तन पान न करा पाना।

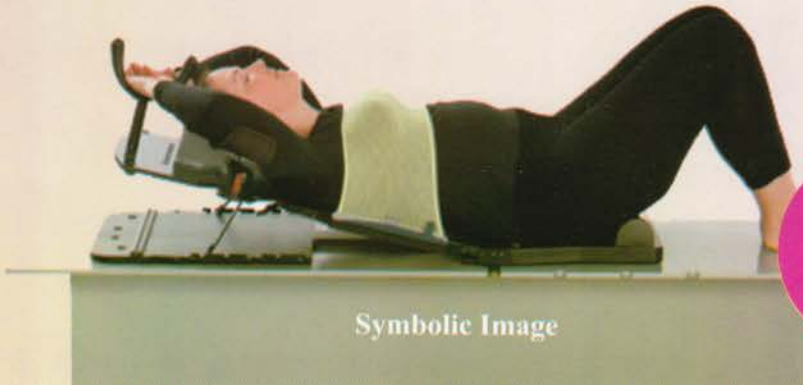

Symbolic Image

डॉ. गरिमा मेहता
एम.एस., पी.एच.डी.
एम.एन.ए.एम.एस., एफ.ए.आई.एस.
सीनियर कन्सलटेंट सर्जन एण्ड ब्रेस्ट कैंसर विशेषज्ञ
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल

देश के ख्यातनाम संस्थाओं से प्रशिक्षित एवं अनुभव प्राप्त कर अत्याधुनिक चिकित्सा पद्धति के विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवाऐं जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल।

न्यूरोलॉजी (मस्तिष्क रोग विभाग) ANCI

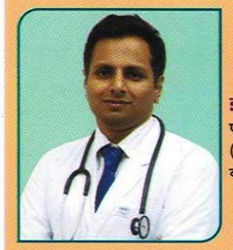

डॉ. आकाश शान्ताराम सेट्टी
एम. डी., डी. एम.
(न्यूरोलॉजी)
कन्सलटेन्ट न्यूरोलोजिस्ट

- Pankinson's - कपकपी, शरीर जकड़न
- Memory Disorder - याददास्त खोना
- Writer Cramp - उंगलियों में दर्द या ऐठन
- Ataxia - मांस पेशियों का अनियन्त्रित होना।
- Dystonia - शरीर का नियन्त्रण खोना।
- अकस्मात तीव्र सरदर्द, आवाज में बदलाव, सुन्नता या झनझनाहट, मिर्गी चलने में लड़खड़ाहट, पक्षाघात, लकवा इत्यादि

यूरोलॉजी विभाग (मूत्र रोग विभाग)

- प्रोस्टेट की गाँठ, गुर्दे की पथरी, युरेटर की पथरी का दूरबीन द्वारा ऑपरेशन
- पेशाब की थैली की पथरी का दूरबीन से ऑपरेशन
- मूत्र की नली की सिकुड़न का दूरबीन से ऑपरेशन
- शिशु की मूत्रनली के वाल्व का दूरबीन से ऑपरेशन
- बिस्तर गीला करना, शिशु के लिंग सबंधी विकृति का निराकरण
- गुर्दे एवं पेशाब की थैली के केंसर, टीबी की जाँच एवं निदान
- स्त्रियों में छींकने पर अनियंत्रित मूत्र स्त्राव का दूरबीन से ऑपरेशन
- पुरूषों में होने वाले गुप्त रोगों का उपचार

डॉ. अभिषेक लद्दा
एम.एस., डी.एन.बी.
(यूरोलॉजी–नड़ियाद)
यूरोलॉजी, एंड्रोलॉजी एवं
किडनी ट्रॉंसप्लान्ट सर्जन

न्यूरोसर्जरी (मस्तिष्क एवं स्पाईन सर्जरी विभाग) ANCI

- मस्तिष्क एवं रीढ़ की हड्डी के ऑपरेशन
- सिर का पानी निकालना
- मस्तिष्क में खून के थक्के का ऑपरेशन
- मस्तिष्क में बने गुब्बारे का ऑपरेशन
- मस्तिष्क की गंभीर चोट का उपचार
- मस्तिष्क की ग्रन्थियों गांठों का ऑपरेशन
- रीढ़ की हड्डी का उपचार
- गर्दन व कंधों के दर्द का उपचार
- साईटिका से होने वाले दर्द का उपचार
- मिर्गी के दौरे का ऑपरेशन
- छोटे चीरे द्वारा रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन

डॉ. सौरभ जैन
एम.एस. एम.सी.एच.
(न्यूरोसर्जरी) एसोसिएट्स
कन्सलटेन्ट न्यूरो सर्जन
एक्स एसोसिएट्स कन्सलटेन्ट,
न्यूरो सर्जरी – मेदांता

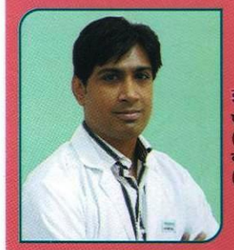

डॉ. मनीष भट्ट
एम.एस., एम.सी.एच.
(यूरोलॉजी)
कन्सलटेन्ट यूरोलॉजिस्ट
(किडनी ट्रांसप्लांट सर्जन)

यूरोलॉजी विभाग (मूत्र रोग विभाग)

- प्रोस्टेट की गाँठ व गुर्दे की पथरी का दूरबीन द्वारा ऑपरेशन।
- युरेटर की पथरी, पेशाब की थैली का दूरबीन से ऑपरेशन।
- मूत्र की नली की सिकुड़न का दूरबीन से ऑपरेशन।
- शिशु की मूत्रनली के वाल्व का दूरबीन से ऑपरेशन।
- बिस्तर गीला करना, शिशु के लिंग संबंधी विकृति का निराकरण।
- गुर्दे एवं पेशाब की थैली के केंसर, टीबी की जाँच एवं निदान।
- स्त्रियों में छींकने पर अनियंत्रित मूत्र स्त्राव का दूरबीन से ऑपरेशन।
- पुरूष में जननांग सम्बंधित विकारों का उपचार।

हृदरोग विभाग (हार्ट एण्ड वेस्कूलर सेंटर)

डॉ. अनिमेश अग्रवाल
एम.डी., डी.एम.
कार्डियोलॉजी कन्सलटेन्ट
इन्टरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट
एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी,

- एंजियोग्राफी
- एंजियोप्लास्टी
- बैलून वॉल्वोटोमी
- पेसमेकर
- वंशानुगत एवं जन्मजात हृदय रोगों का उपचार

हाथ की नसों से एंजियोप्लास्टी के विशेषज्ञ

बर्न, प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जरी विभाग

- जले के बाद अगों की सिकुड़न का उपचार
- कटे अंगो को जोडना
- शरीर की चर्बी घटाना
- चेहरे की झुरिया हटाना
- हेयर ट्रासप्लांट, टमी-टक
- होठ को सुन्दर बनाना
- कटे होठ, तालु का ऑपरेशन
- चेहरे से तिल व धब्बे हटाना
- चेहरे को सुन्दर बनाना, इत्यादी
- स्त्रियों में विवाह पूर्व पेट का आकार एवं सुदृढ़ता प्रदान करना
- सभी प्रकार की कॉस्मेटीक सर्जरी एवं जन्म जात विकारो का उपचार।
- गंभीर दुर्घटनाओं के मरीजों का त्वरित उपचार।

डॉ. विमल कुमार मित्तल
एम.एस. एम.सी.एच
बर्न, प्लास्टिक एवं
कॉस्मेटिक सर्जन

गेस्टोएंट्रोलॉजी (पेट एवं उदर रोग विभाग)

- भोजन निगलने एवं भोजन नली में घाव व गाँठ की तकलीफ का उपचार।
- भोजन नली में खून की नसों के फैलाव में एण्डोस्कॉपी द्वारा छल्ले लगाना। EVL
- आँतों में टी.बी. का एण्डोस्कॉपी द्वारा जाँच एवं उपचार।
- पीलिया, एवं अन्य लिवर की बीमारियों का निदान/उपचार।
- खूनी दस्त, खून की उल्टी, बड़ी व छोटी आँत की गाँठ व घाव, आंत की रूकावट (SAIO) का एण्डोस्कॉपी द्वारा उपचार
- पित्त की नली में पथरी का ERCP द्वारा उपचार।
- अतिसंवेदनशील आंत्त व्याधि (IBS) एवं अन्य आंत्त संबंधी बीमारियों का उपचार।
- पेट दर्द व अग्नाशय संबंधित रोगों,पेट में पानी भरने का (Ascites) निदान व उपचार।

डॉ. धर्मेश के शाह
एम.डी., डी.एम., डी.एन.बी.
(गेस्ट्रोएंट्रोलॉजी)
कन्सलटेन्ट गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट

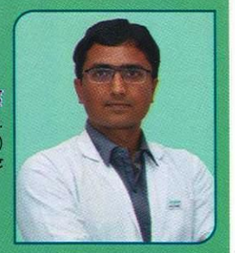

डॉ. मोहित सक्सेना
एम.डी (डर्मेटोलॉजी,
वेनेरियोलोजी व लेप्रोसी)
काशी हिन्दु विश्वविद्यालय
BHU–वाराणसी(उ.प्र.)
चर्मरोग विशेषज्ञ

डर्मेटोलॉजी (चर्म रोग विभाग)

- दाद-खाज, फोड़े-फुन्सी, कील, मुँहासे, झाईयाँ
- सोरियासिस, जुल पित्थी, पेम्फिगस, सफेद दाग, कुष्ठ रोग, एक्जीमा, दवाओं का रिएक्शन
- बालो का झड़ना, नाखूनों के रोग एवं बच्चों के त्वचा रोग
- गुप्त रोग, चिकेन पोक्स, मोलस्कम, वार्ट

गुर्दा स्वस्थ तो जिन्दगी मस्त

पश्चिमी राजस्थान पथरी क्षेत्र होने से यहां गुर्दा रोगियों की संख्या अधिक है। किड़नी फेल होना अर्थात किड़नी (गुर्दो) के कार्य में कमी आना। यह दो प्रकार से होता है।

एक्यूट रीनल फेलियर में किड़नी फेल का प्रमुख कारण किड़नी रोग नहीं बल्कि अन्य रोग जैसे इन्फेक्शन, हार्ट फेलियर, महिलाओं में अबोर्शन, दर्द निवारण दवाईयां आदि होती है। इसके उपचार में भी डायलिसिस की आवश्यकता होती हैं परन्तु **90** प्रतिशत रोगियो में किड़नी पुनः सामान्य हो जाती है।

क्रोनिक रीनल फेलियार में प्राइमरी किसी बीमारी के कारण होता हैं जो कि धीरे–धीरे बढ़ती हैं कई बार इसके कोई लक्षण नही होते है तथा इसका पता तभी चलता हैं जब मरीज अंतिम स्टेज में पहुच जाता है तथा उस स्थिति में इलाज डायलिसिस या किड़नी प्रत्यारोपण ही होता है।

"सीरम क्रिएटिनीन–एक छोटी सी जाँच करा कर गुर्दे को जीवरनभर स्वस्थ रखा जा सकता हैं।"

मधुमेह, मोटापा गुर्दे का दुश्मन क्रोनिक डिजिज में जीवन भर डायलिसिस नही

50 वर्षीय महाशय को शुगर की बीमारी, लो बीपी ओर फिर निमोनिया होने से गुर्दो में इंफेक्शन हो गया। जिससे उपचार के लिए एक अन्य अस्पताल में परामर्श एवं दवाईयां ली। जहां जीवन भर डायलेसिस की सलाह दी गई। जीबीएच अमेरिकन में पुनः गुर्दे सम्बिधित जॉचें की गई क्रियेटनीन **6.5 mg/dl** पाया गया। जबकि एक सामान्य व्यक्ति में क्रियेटनीन **1.5 mg/dl** होता हैं। इस केस में क्रियेटनीन खतरे से अधिक पाया गया। डॉ. बकुल गुप्ता ने सामान्य उपचार अपनाकर दवाइयों (इंजेक्शन) एवं फ्लूड मेनेजमेन्ट करते हुए बिना डायलिसिस के उपचार किया। दो दिन में ही क्रियेटनीन **2.00 mg/dl** पर आ गया। बिना डायलिसिस के रोगी स्वस्थ हैं। गुर्दा रोगियों को एक बार डायलिसिस होने पर जीवन भर के लिए डायलिसिस करवाना पडे यह आवश्यक नहीं। पूरी तरह से सामान्य जीवन यापन करने लगे।

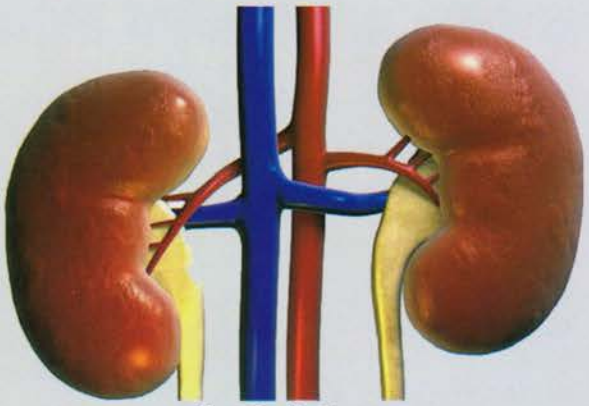

Symbolic Image

स्वाइन फ्लू के कारण किडनी फेलीयर

हाल ही के दिनों में स्वाइन फ्लू के प्रभाव से कई लोगों को जान गवानी पड़ी हैं तो कई लोग इसके होने के बाद अन्य बीमारीयों के शिकार भी हो रहे हैं। ऐसे ही रोगी **55** वर्षीय सुनिल जी खांसी, सांस की तकलीफ एवं बुखार होने के कारण जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में परामर्श एवं उपचार के लिए आये। सामान्य जॉचों के साथ स्वाइन फ्लू एवं क्रियेटनीन की जॉचे की गई जिसमें स्वाइन फ्लू पोजेटिव पाया गया। क्रियेटनीन **4.00 mg/dl** पाया गया। इलाज शुरू करने के दो दिन बाद रोगी का क्रियेटनीन बढकर **8.00 mg/dl** हो गया जो खतरे के स्तर से काफी अधिक था। तुरन्त डायलेसिस की सलाह दी गई।

डायलिसिस वार्ड

डायलिसिस शुरू करने के बाद मात्र दस बार डायलिसिस किया गया। साथ ही एंटीबाइटीक दवाओं द्वारा उपचार किया गया। वर्तमान में बिना डायलिसिस के सामान्य जीवन यापन कर रहे है। साथ ही परिजनो की गलत धारणा भी दूर हो पाई।

डॉ. बकुल गुप्ता, एम.डी.,डी.एम–कन्सल्टेंट नेफ्रोलॉजी एवं ट्रासप्लांट फिजीशियन। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल।

Symbolic Image

अब पेंशनर्स को घुटने के ऑपरेशन पर मिलेंगे 1 लाख 10 हजार रुपए

पेंशन मेडिकल पॉलिसी में दुगुनी हुई राशि, प्रदेश में हैं 4 लाख पेंशनर्स

हेल्थ रिपोर्टर | उदयपुर

राज्य सरकार ने पेंशनर्स मेडिकल पॉलिसी में हाल ही बड़े बदलाव किए गए हैं। इसमें पेंशनर्स को घुटने के ऑपरेशन पर 1 लाख 10 हजार रुपए पुनर्भरण के तौर पर मिलेंगे। पहले ये 55 हजार रुपए ही मिलते थे।

इस पॉलिसी में जिले के 20 हजार और प्रदेश में 4 लाख पेंशनर्स शामिल होंगे। सेवाकाल में दिए अंशदान से यह सुविधा मिलती है। पेंशनकाल में बेहतर मेडिकल सुविधाओं की मांग हमेशा रही है। इसी में घुटनों के ऑपरेशन पर पुनर्भरण राशि बढ़ाने की भी मांग थी। यह बढ़ी हुई राशि दोनों घुटनों का ऑपरेशन पर अलग-अलग देय होगी। पेंशनर समाज ने इसका स्वागत किया है।

आंकड़ों में

4.20 लाख पेंशनर प्रदेशभर में

2.10 लाख 70 वर्ष से अधिक के

2.25 लाख पेंशनर शहरी क्षेत्र में

02 हजार करवाते ऑपरेशन

ये फायदे के बदलाव

दैनिक भास्कर न्यूज

जोड़ प्रत्यारोपण करवाना अब और आसान

पेंशनर्स एवं राज्य सरकार के कर्मचारियों हेतु निर्धारित पुर्नभरण की राशि में ही घुटना प्रत्यारोपण।

मुझे दो वर्ष से घुटनों में दर्द होने लगा। कई प्रकार की दवाओं के बाद भी दर्द ठीक नहीं हो पा रहा था। मैनें घुटना प्रत्यारोपण के बारे में जानने के लिए जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में परामर्श लिया। ऑपरेशन के बाद की सम्पूर्ण प्रक्रिया के बारे में जाना। नी–रिप्लेसमेंट के लिए सामान्य रक्त एवं शारीरिक जांच के साथ हड्डी के लिए डेस्ला टेस्ट करवाया गया। जॉचों के बाद जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के डाक्टर ने बताया कि इसके लिए अत्याधुनिक चिकित्सा पद्धति में घुटना प्रत्यारोपण किया जा सकता हैं। मेरे घुटनों का प्रत्यारोपण किया गया और अब दर्द रहित जीवन यापन कर रही हूँ।

रोगी–सुरज देवी

सम्भलकर बैठे कहीं सेहत ही न बैठ जाये

मैं सरकारी कर्मचारी हुँ। अधिक उम्र के साथ मेरे घुटने के जोड़ो में दर्द होने लगा। जिससे एक बार बैठ जाने पर उठा ही नहीं जाता था। कई प्रकार की वैकल्पिक दवाईयां व इलाज अपनायें। लेकिन कुछ दिन बाद दर्द वापस शुरू हो जाता। फिर मैने घुटना प्रत्यारोपण के लिए जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में परामर्श लिया। तत्पश्चात् ऑपरेशन कर घुटना प्रत्यारोपण किया गया। ऑपरेशन के पश्चात् **5** दिन की देखरेख के बाद सामान्य हूँ।

रोगी कैलाश जोशी

जोड़ प्रत्यारोपण कब?

जब जोड़ो की स्थिति बहुत खराब हो जाती है, उसे दवाओं से ठीक नही किया जा सकता, तब जोड़ प्रत्यारोपण की आवश्यकता पड़ती हैं जिससे जोड़ो की सतहो को बदलकर कृत्रिम इम्पलांट प्रत्यारोपित किये जाते हैं यह एक बहुत ही सफल ऑपरेशन हैं, जिसे मरीज अपनी रोजमर्रा की घुटनों के दर्द की परेशानियों से निजात पा सकता है। सामान्य चलना–फिरना, उठना–बैठना, सीढिया चढना उतरना कर सकता हैं।

दवाईयों पर निर्भर क्यों?

अब अत्याधुनिक चिकित्सा पद्धति में इसका इलाज सम्भव हैं। अब तक हमारे यहाँ इस समस्या से पीड़ित लोग पेन किलर्स गोलियों और क्रीम पर ही निर्भर है। यह खतरनाक केमिकल डायक्लोफिनॉक, पैरासिटामॉल और मॉर्फिन जैसे दवाईयां हैं। ये कंपाउड दर्द को कम नहीं करते बल्कि हमारी शरीर की चेतना को कुछ समय के लिए सुन्न कर देते है जिससे दर्द का एहसास नही होता। इन दवाईयों से कुछ समय के लिए राहत मिलती हैं लेकिन इन दवाईयों का हमारे शरीर पर लंबें समय तक दुष्परिणाम होते हैं साथ ही ये दवाईयां किडनी और लीवर पर असर करती हैं आधुनिक चिकित्सा पद्धति में जोड़ो के ऑपरेशन (प्रत्यारोपण या नि रिप्लेसमेंट) सम्भव हैं।

डॉ. मनीष अग्रवाल, जोईन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जन, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल।

बच्चों के लिए मेडिकल काउंसलिंग उपचार का महत्वपूर्ण हिस्सा है

NICU

छोटी उम्र की बीमारी का बड़ा असर

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में चिकित्सा सेवाओं के दौरान कई केस का उपचार करने का मौका मिला। जिसे मैं साझा कर रहा हुँ। 9 माह के भव्यांश को लेकर आई उसकी माँ ने कई अस्पतालों से उपचार करवाया। लेकिन बच्चे की वास्तविक समस्या का उपचार नहीं हो पाने के कारण बार–बार बीमार होने से शारीरिक विकास नहीं हो पा रहा था।

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में लाने के बाद बच्चे की सामान्य व मल **(Stool PH & RS)** की विशेष जॉच करवाई गई। बच्चा **(Lactose Intolerance)** की समस्या से ग्रसित होना पाया गया। जिसे अन्य सप्लीमेंट के साथ लेक्टॉस फ्री डाइट दी गई। शिशु रोग विभाग में **(PICU)** में भर्ती करवाया गया।

लेक्टॉस फ्री डाईट दी गई जिससे वह नॉर्मल होने लगा। दो दिन बाद बच्चों में काफी प्रोग्रेस देखी गई। तीसरे दिन स्वस्थ हालत में हॉस्पीटल से छुट्टी दे दी गई।

शुगर मात्रा को डायजेस्ट नही कर पाना **(Lactose Intolerance)** की समस्या बच्चों में जन्मजात हो सकती है। गंभीर नही हैं लेकिन बच्चों में शारीरिक विकास, बार–बार बीमार होना और बढ़ती उम्र के साथ अन्य बीमारीयां जैसे डायरिया, शारीरिक कमजोरी होना, लेक्टोस युक्त भोजन नही पचा पाना इत्यादि समस्याएं होती है।

NICU

Symbolic Image

तनाव में बच्चों को मेडिकल काउंसलिंग की आवश्यकता होती हैं दवाईयों की नहीं

चित्तौड़ निवासी 14 वर्षीय बालिका तीन दिन तक एक स्थानीय अस्पताल में हाईग्रेड फिवर, हेडेक, सिवरिन का इलाज करवाया। जहाँ मलेरिया और एण्टी मेडिसीन (ताण की दवाईयां) दी गई। चौथे दिन जब बच्ची के स्वास्थ में सुधार नहीं होने पर जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में भर्ती करवाया। पूर्व अपनाये गये इलाज की विस्तृत हिस्ट्री देखी तो गंभीर बीमारी नही होने का अंदेशा लगा। यहां पर कुछ सामान्य जॉच कर मेडिकल डिटेल लेकर सामान्य उपचार (मेडिकल काउंसलिंग) अपनाया। इसका प्रमुख कारण का पता लगाया तो बच्ची को जीवनशैली और परीक्षा के कारण भंयकर तनाव होना पाया गया। इसी वजह से सिरदर्द, बुखार था। बच्ची को हॉस्पीटल में भर्ती कर मेडिकल काउसिंग की गई। विशेष ऑब्जर्वेशन में रखा गया। कम से कम इनवेस्टीगेशन और बहुत ही कम खर्च में दो दिन बाद बच्ची स्वस्थ होकर अपने घर गई और परीक्षा भी दी।

रेयान स्कूल में बच्चों का स्वास्थ्य प्रशिक्षण

बच्चों में इस प्रकार की बीमारी सामान्य कारणों से होती है। जैसे तनाव, व्यवहार, कार्यशैली मानसिक दबाव प्रमुख है। **(Conversion/Reaction/Functional/Hystorical)** जिसमें बच्चा एक ही मनोस्थिति से ग्रसित हो जाता हैं जिससे बुखार, हेडेक, सिवरिन या अन्य समस्या हो सकती हैं ऐसे में किसी भी प्रकार की सिरदर्द या ताण जैसी खतरनाक दवाईयां देना उचित नही हैं। ऐसी समस्याओं में पेडियेट्रिक कांउन्सिलिंग की आवश्यकता होती है। साथ ही भरपूर नींद की भी आवश्यकता होती हैं। जिससे बच्चा अपने आप को गतिमान एवं वर्तमान जीवनशैली में आ जाये।

डॉ. मनोज अग्रवाल - शिशुरोग विशेषज्ञ, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल।

जीबीएच हॉस्पीटल द्वारा नियमित ओपीडी एवं शिविर

- **नाक–कान–गला विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल उदयपुर एवं शर्मा हॉस्पीटल, डूंगरपुर के सयुक्त तत्वावधान् में जाँच एवं परामर्श शिविर, प्रत्येक माह के चौथे शनिवार।
- **नाक–कान–गला विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल उदयपुर एवं शर्मा हॉस्पीटल, कांकरोली के सयुक्त तत्वावधान् में जाँच एवं परामर्श शिविर, प्रत्येक माह के चौथे रविवार।
- **यूरोलॉजी विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल एवं डॉ. लद्ढा हॉस्पीटल, नये बस स्टेण्ड के पीछे सिंधी कॉलोनी, बांसवाड़ा के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह के तीसरे शुकवार।
- **ऑकालॉजी (केंसर) विभाग :** जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल एवं राधामोहन महरोत्रा ग्लोबल हॉस्पीटल ट्रोमा सेन्टर, तलहटी, आबुरोड़ के सयुक्त तत्वावधान में नियमित कैंसर जाँच एवं परामर्श शिविर, प्रत्येक माह के प्रथम शनिवार।
- **ऑकालॉजी (केंसर) विभाग :** जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल एवं आस्था पॉली क्लीनिक, रेलवे स्टेशन के पास, नीमच के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह के दूसरे शनिवार।
- **ऑकालॉजी (केंसर) विभाग :** जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल एवं एम.के. हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, रामटेकरी कार्नर, मंदसौर के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह के तीसरे शनिवार।
- **ऑकालॉजी (केंसर) विभाग :** जीबीएच मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल, बेडवास, उदयुपर एवं डॉ. व्यास मेडिको सर्जिकल हॉस्पीटल, बांसवाड़ा के सयुक्त तत्वावधान में नियमित कैंसर जाँच एवं परामर्श शिविर, प्रत्येक माह के तीसरे शनिवार।
- **हृदय रोग, पेट एवं उदर रोग विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल एवं एस. मिशन हॉस्पीटल, नये बस स्टेण्ड के सामने, बाँसवाड़ा के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह के तीसरे गुरूवार।
- **हृदय रोग विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल एवं विमल नर्सिंग होम, नीमच के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह के दूसरे मंगलवार।
- **हृदय रोग विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल एवं पमनानी हॉस्पीटल एवं रिसर्च सेन्टर रेलवे स्टेशन रोड़, मंदसौर के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह के दूसरे मंगलवार।
- **मस्तिष्क रोग एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग :** जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल एवं शर्मा नर्सिंग होम,भीलवाड़ा के सयुक्त तत्वावधान में जाँच एवं परामर्श शिविर प्रत्येक माह की 30 तारिख।

जी.बी.एच. इन न्यूज

आज विश्व पेडियाट्रिक कैंसर दिवस

कैंसर पीड़ित बच्चों के प्रति जागरूक हो समाज

जीबीएच जनरल हॉस्पीटल में तीन दिवसीय निशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर आज से

जीबीएच जनरल हॉस्पीटल में तीन दिवसीय शिविर में प्रथम दिन 674 लोग हुए लाभावित

चेहरे पर दिखती है कैंसर पर विजय पाने की खुशी

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर कल

चिकित्सा परामर्श केन्द्र संचालित

शिविर में 386 रोगियों ने लाभ लिया

मूंगफली का दाना फंसने से बच्ची हुई बेहोश, उपचार से बची

अस्थि रोग के कारण व बचाव के उपाय बताए

संगोष्ठी में चर्चा

विश्व हृदय दिवस पर चिकित्सा शिविर

कैंसर का सामना जागरूकता व दिलेरी से ही संभव

Celebrating 10 Year Since 2006

AIHML

10 वर्षों की पारदर्शी एवं प्रतिष्ठित चिकित्सा सेवाओं के उपरान्त

जी.बी.एच. परिवार लाया है - 300 शैय्याओं का अत्याधुनिक चिकित्सालय

आम जन को समर्पित, सबसे न्यूनतम दरों में

जी.बी.एच. जनरल हॉस्पीटल

चर्म रोग विभाग
सफेद दाग, कुष्ठ रोग, एक्जीमा, दवाओं का रिएक्शन, कील, मुँहासे, झाईयाँ, सोरियासिस, चिकेन पोक्स, मोलस्कम, वार्ट, बालो का झड़ना, नाखूनों के रोग एवं बच्चों के त्वचा रोग, गुप्त रोग आदि के उपचार।

दन्त रोग विभाग
फिक्स दाँत लगाना, बत्तीसी लगाना, दाँत निकालना, मसूड़ों की सर्जरी, दाँतो के झंझनाहट, दाँतों की सफाई, दाँतों से सम्बन्धित समस्याओं का उपचार।

पेट व उदर रोग विभाग
पेट, लिवर, भोजन नली, भोजन थैली (स्टोमक), छोटी व बडी आंत, अग्नाश्य, पित्त की नली में पथरी, दस्त, कब्ज, पीलिया आदि से संबंधित समस्त प्रकार की बीमारियों का उपचार।

स्त्री व प्रसूति रोग विभाग
सामान्य एवं ऑपरेशन द्वारा प्रसव, डी.एन.सी., बच्चेदानी सम्बंधी रोगों एवं स्त्रीरोगों के उपचार की सुविधा। महिला-पुरुष नसबंदी, निःसंतान दम्पतियों के उपचार की सुविधा।

हृदय रोग विभाग
एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी, बैलून वॉल्वोटोमी, पेसमेकर, वंशानुगत एवं जन्मजात हृदय रोगों का उपचार

जनरल सर्जरी विभाग
पाईल्स, हर्निया, एपेंडिक्स, आंतों, गॉल ब्लेडर, फिस्टुला, स्ट्रीकचर सम्बंधी सभी ऑपरेशन।

जनरल मेडिसिन विभाग
सर्दी-जुखाम, खाँसी, बुखार, मलेरिया, डेंगु, पीलिया, टाईफाईड, एवं अन्य सभी आदि रोगों मौसमी बीमारियों की जाँचे व उपचार।

मूत्र रोग विभाग
प्रोस्टेट, पथरी, पेशाब में जलन, रक्त स्त्राव, पेशाब की थैली के केंसर, इत्यादि का दूरबीन द्वारा लेजर पद्धति से ऑपरेशन।

नेत्र रोग विभाग
मोतियोबिंद, कॉर्निया, ग्लूकोमा, रेटिना, भेंगापन, ऑप्टिकल सेवाएं उपलब्ध।

शिशु रोग विभाग
नवजात शिशुओं के लिए NICU, PICU वार्ड, टीकाकरण की सुविधा, बच्चों में होने वाले सभी प्रकार के रोगों का उपचार।

गुर्दा रोग विभाग
किडनी फेल रोगी, उच्च ब्लड प्रेशर, सम्पूर्ण शरीर मे सूजन, मूत्र में रक्त व प्रोटीन, एक्यूट रिनल फेलियर, किड़नी प्रत्यारोपित रोगी, डायबीटिक संबधित गुर्दा रोग का उपचार।

ई.एन.टी. विभाग
दूरबीन द्वारा नाक-कान-गले के ऑपरेशन, टॉन्सिल, नाक की हड्डी का टेढ़ापन, साईनस, ऐलर्जी, खरटि, कम सुनाई देना, कान-नाक से खून बहना, बहरापन, स्वरपेटी, कान की हड्डी के ऑपरेशन व थायरॉइड की बीमारी का उपचार।

पेथोलॉजी – सी.बी.सी., ब्लड–शुगर, थायरॉइड, HbA1c, टाईफाइड, यूरिन,क्रिएटिनिन, यूरिन कल्चर।

रेडियोलॉजी – एक्स–रे, सी.टी. स्केन, एम.आर.आई., सोनोग्राफी, मेमोग्राफी सुविधा।

परामर्श समय प्रातः 10.00 बजे से 3.00 बजे तक।

- ☑ विशेषज्ञ डॉक्टर, अनुभवी नर्सिंग स्टाफ।
- ☑ अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर
- ☑ आपातकालीन एवं ट्रोमा केयर।
- ☑ सभी प्रकार के ऑपरेशन एवं **24** घण्टे एम्बुलेंस सुविधाएं।

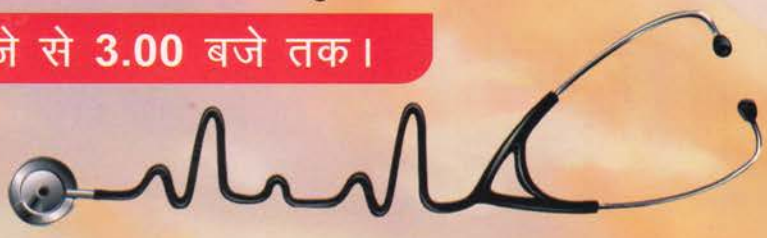

संरक्षक
डॉ. कीर्ति जैन
सी.एम.डी.

सम्पादक मण्डल
डॉ. ए.एस.गुप्ता
सीनियर सर्जन

सम्पादक मण्डल
डॉ. आनन्द झा
ग्रुप डायरेक्टर

सह–सम्पादक
पुष्पेन्द्र डी. गामोट
पी.आर.ओ.

मुद्रक
स्टार एड मीडिया प्रा.लि.
उदयपुर

प्रकाशक
जी.बी.एच.अमेरिकन हॉस्पीटल
101, कोठी बाग, भट्ट जी की बाड़ी, उदयपुर, 313001 –राजस्थान

जी.बी.एच. मेमोरियल केंसर हॉस्पीटल
जी.बी.एच. जनरल हास्पीटल
एयरपोर्ट रोड़, ट्रांसपोर्ट नगर के पास, बेडवास, उदयपुर, 313001 –राजस्थान

सम्पर्क : +91 0294-3056000, 2426000 | ट्रोमा हेल्पलाइन : 0 93523 04050 | केंसर हेल्पलाइन : 0294-3060600